Toppersnotes®
Unleash the topper in you

उत्तर प्रदेश

स्नातकोत्तर शिक्षक (PGT)

उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग (UPESSC)

(अर्थशास्त्र)

भाग - 1

SIERRA INNOVATIONS

INDEX

S.NO.	CHAPTER	P.NO.
	ECONOMICS	
1.	अर्थशास्त्र का परिचय (Introduction to Economics)	1
2.	मांग का अर्थ (Meaning of Demand)	7
3.	उदासीनता वक्र विश्लेषण	13
4.	उपभोक्ता का अतिरेक (Consumer's Surplus)	18
5.	उत्पादन फलन (Production Function)	23
6.	उत्पादन के नियम (Laws of Production)	34
7.	पैमाने के प्रतिफल (Returns to Scale)	39
8.	उत्पादन फलन (Production Function)	45
9.	जनसंख्या सिद्धान्त (Population Theory)	51
10.	पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition)	57
11.	एकाधिकार (Monopoly)	64
12.	द्वैधाधिकार (Duopoly)	71
13.	अल्पाधिकार (Oligopoly)	78
14.	एकाधिकारी प्रतियोगिता (Monopolistic Competition)	86
15.	कीमत निर्धारण (Price Determination)	94
16.	वितरण सिद्धान्त (Theory of Distribution)	102
17.	लगान सिद्धान्त (Theory of Rent)	110
18.	अवसर लागत सिद्धान्त (Opportunity Cost Theory)	117

1 CHAPTER अर्थशास्त्र का परिचय (Introduction to Economics)

1. अर्थशास्त्र का अर्थ (Meaning of Economics)

परिभाषा

अर्थशास्त्र वह सामाजिक विज्ञान है जो सीमित संसाधनों (Scarce Resources) का उपयोग करके असीमित मानवीय आवश्यकताओं (Unlimited Wants) की पूर्ति हेतु विभिन्न विकल्पों का अध्ययन करता है।

व्याख्या (2–3 पंक्तियाँ):

✓ मनुष्य की आवश्यकताएँ असीमित होती हैं जबकि संसाधन सीमित होते हैं।

✓ इसलिए व्यक्ति, समाज एवं सरकार को यह निर्णय लेना पड़ता है कि उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग कैसे किया जाए।

✓ यही अध्ययन **अर्थ**शास्त्र का मूल विषय है।

2. अर्थशास्त्र की प्रमुख परिभाषाएँ (Definitions of Economics)

(A) एडम स्मिथ (Adam Smith) – धन की परिभाषा (Wealth Definition)

परिभाषा

"Economics is the science of wealth."

व्याख्या

- एडम स्मिथ ने 1776 में प्रकाशित अपनी पुस्तक "The Wealth of Nations" में **अर्थ**शास्त्र को धन का विज्ञान बताया।
- इनके अनुसार उत्पादन, विनिमय, वितरण तथा उपभोग का मुख्य उद्देश्य धन की वृद्धि है।
- इस **परिभाषा** में मानव कल्याण की अपेक्षा धन पर अधिक बल दिया गया है।

मुख्य विशेषताएँ

- धन को प्रमुख स्थान
- उत्पादन एवं व्यापार पर बल
- राष्ट्रीय संपत्ति में वृद्धि

आलोचना

- मानव कल्याण की उपेक्षा
- केवल भौतिक वस्तुओं पर ध्यान
- सामाजिक एवं नैतिक पक्षों की अनदेखी

Toppersnotes Unleash the topper in you

(B) अल्फ्रेड मार्शल (Alfred Marshall) – कल्याण की परिभाषा (Welfare Definition)

परिभाषा

"Economics is a study of mankind in the ordinary business of life."

व्याख्या

- मार्शल ने **अर्थ**शास्त्र को मानव कल्याण का विज्ञान माना।
- इनके अनुसार आर्थिक गतिविधियों का उद्देश्य केवल धन अर्जित करना नहीं बल्कि मानव जीवन का कल्याण करना भी है।
- धन मानव कल्याण प्राप्त करने का साधन है, साध्य नहीं।

मुख्य विशेषताएँ

- मानव को केंद्र में रखा।
- आर्थिक कल्याण पर बल।
- धन को साधन माना।

आलोचना

- केवल भौतिक कल्याण तक सीमित।
- सामाजिक एवं मानसिक संतुष्टि की उपेक्षा।
- कल्याण को मापना कठिन।

(C) लायनल रॉबिन्स (Lionel Robbins) – दुर्लभता की परिभाषा (Scarcity Definition)

परिभाषा

"Economics is the science which studies human behaviour as a relationship between ends and scarce means which have alternative uses."

व्याख्या

- रॉबिन्स के अनुसार संसाधन सीमित तथा आवश्यकताएँ असीमित होती हैं।
- प्रत्येक संसाधन के अनेक वैकल्पिक उपयोग होते हैं।
- इसलिए सर्वोत्तम विकल्प का चयन ही **अर्थ**शास्त्र का विषय है।

मुख्य विशेषताएँ

- संसाधनों की दुर्लभता
- विकल्प चयन (Choice)
- अवसर लागत (Opportunity Cost)

आलोचना

- कल्याण की उपेक्षा।
- आर्थिक विकास पर कम ध्यान।
- नैतिक मूल्यों का अभाव।

(D) पॉल सैमुएलसन (Paul Samuelson) – विकास की परिभाषा (Growth Definition)

व्याख्या

- सैमुएलसन ने **अर्थ**शास्त्र को संसाधनों के कुशल उपयोग तथा आर्थिक विकास का विज्ञान माना।
- इनके अनुसार वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संसाधनों का सर्वोत्तम आवंटन आवश्यक है।
- यह आधुनिक एवं सर्वाधिक व्यापक **परिभाषा** मानी जाती है।

विशेषताएँ

- विकास पर बल
- संसाधनों का कुशल उपयोग
- वर्तमान एवं भविष्य दोनों की चिंता

3. अर्थशास्त्र की प्रकृति (Nature of Economics)

(1) सामाजिक विज्ञान (Social Science)

व्याख्या

- **अर्थ**शास्त्र मानव के आर्थिक व्यवहार का अध्ययन करता है।
- यह व्यक्ति, परिवार, उद्योग तथा सरकार के निर्णयों का विश्लेषण करता है।

(2) विज्ञान एवं कला (Science and Art)

विज्ञान के रूप में

- सिद्धांतों एवं नियमों पर आधारित।
- कारण एवं परिणाम का अध्ययन।

कला के रूप में

- सिद्धांतों का व्यावहारिक उपयोग।
- आर्थिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।

(3) सकारात्मक विज्ञान (Positive Science)

व्याख्या

- यह बताता है कि वास्तविकता में क्या है।
- **उदाहरण**—भारत में मुद्रास्फीति 6% है।

(4) मानक विज्ञान (Normative Science)

व्याख्या

- यह बताता है कि क्या होना चाहिए।
- इसमें मूल्य निर्णय (Value Judgment) शामिल होते हैं।
- **उदाहरण**—सरकार को मुद्रास्फीति कम करनी चाहिए।

Toppersnotes Unleash the topper in you

(5) गतिशील विज्ञान (Dynamic Science)

व्याख्या

- **अर्थ**व्यवस्था समय के साथ बदलती रहती है।
- इसलिए आर्थिक सिद्धांत भी परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं।

(6) विकासोन्मुख विज्ञान

व्याख्या

- आधुनिक **अर्थ**शास्त्र आर्थिक विकास, रोजगार, गरीबी उन्मूलन तथा सतत विकास का अध्ययन करता है।
- विकासशील देशों में इसका विशेष महत्व है।

4. अर्थशास्त्र का क्षेत्र (Scope of Economics)

(A) उपभोग (Consumption)

व्याख्या

- वस्तुओं एवं सेवाओं के उपयोग से आवश्यकताओं की पूर्ति उपभोग कहलाती है।
- इसमें उपभोक्ता के निर्णय एवं व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

(B) उत्पादन (Production)

व्याख्या

- संसाधनों को उपयोगी वस्तुओं एवं सेवाओं में परिवर्तित करने की प्रक्रिया उत्पादन है।
- इसमें भूमि, श्रम, पूंजी एवं उद्यमी की भूमिका का अध्ययन होता है।

(C) विनिमय (Exchange)

व्याख्या

- वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय-विक्रय तथा मूल्य निर्धारण विनिमय कहलाता है।
- इसमें बाजार, मांग एवं पूर्ति का अध्ययन किया जाता है।

(D) वितरण (Distribution)

व्याख्या

- उत्पादन से प्राप्त आय का विभिन्न उत्पादन साधनों में वितरण।
- मजदूरी, लगान, ब्याज एवं लाभ का अध्ययन इसी के अंतर्गत किया जाता है।

(E) सार्वजनिक वित्त (Public Finance)

व्याख्या

- सरकार की आय, व्यय, कर एवं बजट का अध्ययन।
- वित्तीय नीति एवं लोककल्याणकारी योजनाएँ भी इसमें शामिल हैं।

(F) अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र

व्याख्या

- देशों के मध्य व्यापार, विदेशी विनिमय, भुगतान संतुलन एवं WTO आदि का अध्ययन।
- वैश्वीकरण के कारण इसका महत्व निरंतर बढ़ रहा है।

5. सूक्ष्म अर्थशास्त्र (Micro Economics)

अर्थ

✓ सूक्ष्म **अर्थ**शास्त्र **अर्थ**व्यवस्था की व्यक्तिगत इकाइयों जैसे उपभोक्ता, फर्म, उद्योग तथा विशिष्ट बाजार का अध्ययन करता है।

मुख्य विशेषताएँ

(1) व्यक्तिगत इकाइयों का अध्ययन

- उपभोक्ता, उत्पादक एवं फर्म के व्यवहार का विश्लेषण।
- निर्णय लेने की प्रक्रिया पर बल।

(2) मूल्य निर्धारण

- किसी वस्तु का मूल्य कैसे निर्धारित होता है, इसका अध्ययन।
- मांग एवं पूर्ति मुख्य आधार हैं।

(3) संसाधनों का आवंटन

- सीमित संसाधनों का विभिन्न उपयोगों में वितरण।
- दक्षता (Efficiency) प्राप्त करने पर बल।

(4) उपभोक्ता संतुलन

- उपभोक्ता अपनी आय से अधिकतम संतुष्टि कैसे प्राप्त करता है।

(5) उत्पादक संतुलन

- उत्पादक न्यूनतम लागत पर अधिकतम लाभ कैसे प्राप्त करता है।

महत्व

✓ मूल्य निर्धारण

✓ कर नीति

✓ संसाधनों का कुशल उपयोग

✓ व्यापारिक निर्णय

सीमाएँ

✓ संपूर्ण **अर्थ**व्यवस्था का चित्र प्रस्तुत नहीं करता।

✓ बेरोजगारी एवं मुद्रास्फीति जैसी व्यापक समस्याओं का पूर्ण समाधान नहीं देता।

Toppersnotes Unleash the topper in you

6. समष्टि अर्थशास्त्र (Macro Economics)

अर्थ

✓ समष्टि **अर्थ**शास्त्र संपूर्ण **अर्थ**व्यवस्था का अध्ययन करता है।

मुख्य विषय

(1) राष्ट्रीय आय

- देश की कुल आय का मापन एवं विश्लेषण।

(2) रोजगार

- बेरोजगारी एवं रोजगार स्तर का अध्ययन।

(3) मुद्रास्फीति

- सामान्य मूल्य स्तर में वृद्धि तथा उसके प्रभावों का विश्लेषण।

(4) आर्थिक विकास

- उत्पादन, आय एवं जीवन स्तर में वृद्धि का अध्ययन।

(5) राजकोषीय एवं मौद्रिक नीति

- सरकार एवं केंद्रीय बैंक द्वारा **अर्थ**व्यवस्था को नियंत्रित करने की नीतियाँ।

महत्व

✓ राष्ट्रीय नीति निर्माण

✓ आर्थिक विकास

✓ मुद्रास्फीति नियंत्रण

✓ रोजगार सृजन

✓ बजट निर्माण

सीमाएँ

✓ व्यक्तिगत व्यवहार की उपेक्षा।

✓ कई निष्कर्ष औसत मानों पर आधारित होते हैं।

7. सूक्ष्म एवं समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर

आधार	**सूक्ष्म अर्थशास्त्र**	**समष्टि अर्थशास्त्र**
अध्ययन इकाई	व्यक्तिगत इकाइयाँ	संपूर्ण **अर्थ**व्यवस्था
मुख्य विषय	मूल्य निर्धारण, उपभोक्ता, फर्म	राष्ट्रीय आय, रोजगार, मुद्रास्फीति
उद्देश्य	संसाधनों का कुशल आवंटन	आर्थिक स्थिरता एवं विकास
दृष्टिकोण	व्यक्तिगत (Individual)	समग्र (Aggregate)
नीति	सूक्ष्म स्तर	राष्ट्रीय स्तर

2 CHAPTER

मांग का अर्थ (Meaning of Demand)

1. मांग का अर्थ (Meaning of Demand)

परिभाषा (Definition)

✓ मांग (Demand) से आशय किसी वस्तु या सेवा की उस मात्रा से है जिसे उपभोक्ता एक निश्चित समय, निश्चित मूल्य तथा अन्य परिस्थितियों के समान रहने पर खरीदने की इच्छा (Desire), क्षमता (Ability) एवं तत्परता (Willingness) रखता है।

व्याख्या

✓ केवल किसी वस्तु की इच्छा (Want) होना मांग नहीं कहलाती।

✓ मांग तभी मानी जाती है जब उपभोक्ता के पास खरीदने की क्षमता तथा खरीदने की वास्तविक इच्छा दोनों हों।

✓ इसलिए इच्छा + क्रय शक्ति + खरीदने की तत्परता = मांग (Demand)

2. मांग की प्रमुख परिभाषाएँ

(A) प्रो. बेनहम (Benham)

परिभाषा

"मांग उस वस्तु की वह मात्रा है जिसे उपभोक्ता एक निश्चित मूल्य पर खरीदना चाहता है तथा खरीद सकता है।"

व्याख्या

- इस **परिभाषा** में मूल्य एवं क्रय-शक्ति दोनों पर बल दिया गया है।
- केवल इच्छा पर्याप्त नहीं है।

(B) स्टोनियर एवं हेग (Stonier & Hague)

परिभाषा

मांग किसी वस्तु की वह मात्रा है जिसे उपभोक्ता किसी निश्चित अवधि में विभिन्न कीमतों पर खरीदने को तैयार रहता है।

व्याख्या

- समय को भी मांग का महत्वपूर्ण निर्धारक माना गया है।
- मांग सदैव किसी निश्चित समय से संबंधित होती है।

3. मांग की विशेषताएँ (Characteristics of Demand)

(1) इच्छा (Desire)

- किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा मांग का पहला तत्व है।
- केवल इच्छा होने से मांग नहीं बनती।

(2) क्रय शक्ति (Purchasing Power)

- उपभोक्ता के पास पर्याप्त आय अथवा धन होना चाहिए।
- आय के बिना इच्छा वास्तविक मांग में परिवर्तित नहीं होती।

(3) खरीदने की तत्परता (Willingness to Buy)

- उपभोक्ता वस्तु खरीदने के लिए मानसिक रूप से तैयार होना चाहिए।
- कई बार आय होने पर भी व्यक्ति खरीदने को तैयार नहीं होता।

(4) निश्चित मूल्य (Given Price)

- मांग सदैव किसी निश्चित मूल्य से संबंधित होती है।
- मूल्य बदलने पर मांग भी बदल सकती है।

(5) निश्चित समय (Particular Time)

- मांग किसी निश्चित समय अवधि की होती है।
- **उदाहरण**—एक सप्ताह, एक महीना अथवा एक वर्ष।

(6) वस्तु की मात्रा (Quantity)

- मांग सदैव वस्तु की मात्रा में व्यक्त की जाती है।
- जैसे—5 किलोग्राम गेहूँ, 10 लीटर दूध।

4. मांग एवं इच्छा में अंतर

आधार	**इच्छा**	**मांग**
अर्थ	वस्तु प्राप्त करने की चाह	इच्छा + आय + खरीदने की तत्परता
आय	आवश्यक नहीं	आवश्यक
खरीद	नहीं भी हो सकती	वास्तविक खरीद की संभावना
आर्थिक अवधारणा	नहीं	हाँ

5. मांग के प्रकार (Types of Demand)

(1) व्यक्तिगत मांग (Individual Demand)

अर्थ

एक उपभोक्ता द्वारा किसी वस्तु की मांग।

उदाहरण

राम प्रति माह 20 किलोग्राम गेहूँ खरीदता है।

(2) बाजार मांग (Market Demand)

अर्थ

सभी उपभोक्ताओं की व्यक्तिगत मांगों का योग।

उदाहरण

पूरे शहर में दूध की कुल मांग।

(3) संयुक्त मांग (Joint Demand)

अर्थ

दो वस्तुओं की एक साथ आवश्यकता।

उदाहरण

कार एवं पेट्रोल

मोबाइल एवं चार्जर

(4) व्युत्पन्न मांग (Derived Demand)

अर्थ

जिस मांग का जन्म किसी अन्य वस्तु की मांग से होता है।

उदाहरण

सीमेंट की मांग मकानों की मांग पर निर्भर करती है।

(5) प्रतिस्पर्धी मांग (Competitive Demand)

अर्थ

दो वस्तुएँ एक-दूसरे का विकल्प हों।

उदाहरण

चाय एवं कॉफी

(6) संयुक्त (Composite) मांग

अर्थ

जब एक वस्तु का अनेक कार्यों में उपयोग होता है।

उदाहरण

दूध का उपयोग पीने, मिठाई तथा दही बनाने में।

6. मांग का नियम (Law of Demand)

प्रतिपादक

अल्फ्रेड मार्शल (Alfred Marshall)

परिभाषा

"अन्य परिस्थितियाँ समान रहने पर (Ceteris Paribus), किसी वस्तु का मूल्य बढ़ने पर उसकी मांग घटती है तथा मूल्य घटने पर मांग बढ़ती है।"

व्याख्या

- ✓ मूल्य एवं मांग में विलोम (Inverse) संबंध होता है।
- ✓ उपभोक्ता कम मूल्य पर अधिक तथा अधिक मूल्य पर कम मात्रा खरीदता है।
- ✓ यही मांग का मूल नियम है।

7. Ceteris Paribus (अन्य बातें समान रहें)

नियम तभी लागू होगा जब—

- ✓ उपभोक्ता की आय स्थिर रहे।
- ✓ रुचि एवं फैशन न बदलें।
- ✓ विकल्प वस्तुओं के मूल्य स्थिर रहें।
- ✓ भविष्य के मूल्य की अपेक्षाएँ न बदलें।
- ✓ जनसंख्या स्थिर रहे।
- ✓ मौसम में परिवर्तन न हो।

8. मांग अनुसूची (Demand Schedule)

मूल्य (₹)	मांग (इकाई)
100	10
80	20
60	30
40	40
20	50

व्याख्या

- ✓ जैसे-जैसे मूल्य कम होता है, मांग बढ़ती जाती है।
- ✓ यही मांग के नियम का व्यावहारिक रूप है।

9. मांग वक्र (Demand Curve)

अर्थ

मांग अनुसूची को ग्राफ पर प्रदर्शित करने वाली रेखा मांग वक्र कहलाती है।

विशेषताएँ

- ✓ बाएँ से दाएँ नीचे की ओर ढाल।
- ✓ ऋणात्मक ढाल (Negative Slope)।
- ✓ मूल्य एवं मांग में विपरीत संबंध।

10. मांग वक्र के नीचे ढलान होने के कारण

(1) सीमांत उपयोगिता ह्रास का नियम

- प्रत्येक अतिरिक्त इकाई से प्राप्त संतुष्टि कम होती जाती है।
- इसलिए उपभोक्ता अतिरिक्त मात्रा तभी खरीदेगा जब मूल्य कम होगा।

(2) आय प्रभाव (Income Effect)

- मूल्य कम होने पर वास्तविक आय बढ़ जाती है।
- उपभोक्ता अधिक मात्रा खरीद सकता है।

(3) प्रतिस्थापन प्रभाव (Substitution Effect)

- मूल्य घटने पर वस्तु अपने विकल्पों की अपेक्षा सस्ती हो जाती है।
- उपभोक्ता उसी वस्तु की मांग बढ़ा देता है।

(4) नए उपभोक्ताओं का प्रवेश

- कम मूल्य होने पर नए उपभोक्ता बाजार में प्रवेश करते हैं।
- इससे कुल मांग बढ़ती है।

(5) विभिन्न उपयोग

- कम मूल्य पर वस्तु का उपयोग अधिक कार्यों में होने लगता है।
- इससे मांग में वृद्धि होती है।

11. मांग के नियम के अपवाद (Exceptions to Law of Demand)

(1) गिफेन वस्तुएँ (Giffen Goods)

- अत्यंत निम्नस्तरीय वस्तुएँ।
- मूल्य बढ़ने पर भी मांग बढ़ सकती है।

(2) प्रतिष्ठा सूचक वस्तुएँ (Veblen Goods)

- हीरा, सोना, लग्जरी कार आदि।
- अधिक मूल्य प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है।

(3) भविष्य में मूल्य वृद्धि की आशंका

- यदि उपभोक्ता को भविष्य में कीमत बढ़ने की उम्मीद हो, तो वर्तमान में अधिक खरीद करेगा।

(4) आवश्यक वस्तुएँ

- नमक, दवा, जीवनरक्षक वस्तुएँ।
- मूल्य बढ़ने पर भी मांग बहुत कम नहीं घटती।

(5) फैशन एवं परंपरा

- कुछ वस्तुओं की मांग फैशन अथवा सामाजिक कारणों से बनी रहती है।

12. मांग के निर्धारक (Determinants of Demand)

1. वस्तु का मूल्य
2. उपभोक्ता की आय
3. रुचि एवं पसंद

Toppersnotes Unleash the topper in you

4. फैशन एवं परंपरा
5. विकल्प वस्तुओं का मूल्य
6. पूरक वस्तुओं का मूल्य
7. जनसंख्या
8. विज्ञापन
9. मौसम
10. भविष्य की मूल्य अपेक्षाएँ
11. आय का वितरण
12. सरकारी नीतियाँ एवं कर

13. मांग में परिवर्तन (Change in Demand)

(A) मांग का विस्तार एवं संकुचन (Extension & Contraction)

- केवल मूल्य में परिवर्तन के कारण मांग की मात्रा बदलती है।
- इसे मांग की मात्रा में परिवर्तन (Change in Quantity Demanded) कहा जाता है।

(B) मांग में वृद्धि एवं कमी (Increase & Decrease in Demand)

- मूल्य के अतिरिक्त अन्य कारकों (आय, रुचि, फैशन आदि) के कारण पूरी मांग वक्र दाएँ या बाएँ खिसकती है।
- इसे मांग में परिवर्तन (Shift in Demand Curve) कहा जाता है।
- मांग = इच्छा + क्रय शक्ति + खरीदने की तत्परता
- अल्फ्रेड मार्शल ने मांग का नियम प्रतिपादित किया।
- Ceteris Paribus का **अर्थ** है—"अन्य परिस्थितियाँ समान रहें"।
- मूल्य एवं मांग में विलोम संबंध होता है।
- गिफेन वस्तुएँ और वेब्लेन वस्तुएँ मांग के नियम के प्रमुख अपवाद हैं।
- Extension/Contraction केवल मूल्य परिवर्तन से, जबकि Increase/Decrease in Demand अन्य निर्धारकों के कारण होती है।

3 CHAPTER
उदासीनता वक्र विश्लेषण

1. उदासीनता वक्र विश्लेषण का परिचय (Introduction)

अर्थ (Meaning)

उदासीनता वक्र विश्लेषण (Indifference Curve Analysis) उपभोक्ता व्यवहार का आधुनिक सिद्धांत (Modern Theory of Consumer Behaviour) है, जिसे जे. आर. हिक्स (J. R. Hicks) एवं आर. जी. डी. एलन (R. G. D. Allen) ने विकसित किया।

व्याख्या

✓ यह सिद्धांत बताता है कि उपभोक्ता सीमित आय में विभिन्न वस्तुओं के ऐसे संयोजन (Combination) का चुनाव करता है जिससे उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो।

✓ इस सिद्धांत में उपयोगिता (Utility) को संख्यात्मक रूप से नहीं मापा जाता, बल्कि केवल प्राथमिकता (Preference) के आधार पर तुलना की जाती है।

2. उदासीनता वक्र की परिभाषा (Definition of Indifference Curve)

प्रो. हिक्स के अनुसार

"उदासीनता वक्र उन विभिन्न संयोजनों का समूह है जिनसे उपभोक्ता को समान स्तर की संतुष्टि प्राप्त होती है।"

व्याख्या

✓ उदासीनता वक्र पर स्थित प्रत्येक बिन्दु समान संतुष्टि (Equal Satisfaction) प्रदान करता है।

✓ इसलिए उपभोक्ता किसी भी बिन्दु को चुनने में उदासीन (Indifferent) रहता है।

3. उदासीनता वक्र की विशेषताएँ (Characteristics of Indifference Curve)

(1) समान संतुष्टि का प्रतिनिधित्व

व्याख्या

- वक्र के प्रत्येक बिन्दु पर उपभोक्ता को समान उपयोगिता प्राप्त होती है।
- इसलिए एक संयोजन से दूसरे संयोजन पर जाने से संतुष्टि में कोई परिवर्तन नहीं होता।

(2) बाएँ से दाएँ नीचे की ओर ढलान (Downward Sloping)

व्याख्या

- यदि एक वस्तु की मात्रा बढ़ती है तो समान संतुष्टि बनाए रखने के लिए दूसरी वस्तु की मात्रा घटानी पड़ती है।
- इसी कारण उदासीनता वक्र ऋणात्मक ढाल (Negative Slope) का होता है।

(3) मूल बिन्दु की ओर उत्तल (Convex to Origin)

व्याख्या

- इसका कारण सीमान्त प्रतिस्थापन दर (Marginal Rate of Substitution - MRS) का घटता हुआ होना है।
- उपभोक्ता एक वस्तु की अधिक मात्रा मिलने पर दूसरी वस्तु का कम त्याग करने को तैयार होता है।

(4) दो उदासीनता वक्र कभी नहीं कटते

व्याख्या

- यदि दो वक्र एक-दूसरे को काटें तो एक ही संयोजन से दो अलग-अलग संतुष्टि स्तर प्राप्त होंगे।
- यह तर्कसंगत नहीं है, इसलिए दो उदासीनता वक्र परस्पर प्रतिच्छेद (Intersect) नहीं करते।

(5) ऊँचा उदासीनता वक्र अधिक संतुष्टि दर्शाता है

व्याख्या

- जो वक्र मूल बिन्दु से अधिक दूर होता है, वह अधिक वस्तुओं के संयोजन को दर्शाता है।
- इसलिए ऊँचा वक्र अधिक उपयोगिता या संतुष्टि का प्रतिनिधित्व करता है।

(6) वक्र मोटा (Thick) नहीं होता

व्याख्या

- यदि वक्र मोटा होगा तो उसके प्रत्येक बिन्दु पर संतुष्टि समान नहीं रहेगी।
- इसलिए उदासीनता वक्र सदैव पतली रेखा (Thin Curve) होती है।

4. उदासीनता मानचित्र (Indifference Map)

अर्थ

एक ही ग्राफ पर विभिन्न संतुष्टि स्तरों को प्रदर्शित करने वाले अनेक उदासीनता वक्रों के समूह को उदासीनता मानचित्र कहते हैं।

व्याख्या

- प्रत्येक ऊँचा वक्र अधिक संतुष्टि का प्रतिनिधित्व करता है।
- इससे उपभोक्ता की प्राथमिकताओं का क्रम स्पष्ट होता है।

5. उदासीनता वक्र सिद्धांत की मान्यताएँ (Assumptions)

(1) उपभोक्ता विवेकशील (Rational Consumer)

व्याख्या

- उपभोक्ता सदैव अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना चाहता है।
- वह अपने संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करता है।

(2) प्राथमिकताएँ निश्चित होती हैं

व्याख्या

- उपभोक्ता की पसंद एवं नापसंद स्थिर रहती है।
- विश्लेषण के दौरान रुचियों में परिवर्तन नहीं माना जाता।

(3) उपयोगिता क्रमिक (Ordinal Utility)

व्याख्या

- उपयोगिता को संख्या में नहीं मापा जाता।
- केवल यह बताया जाता है कि कौन-सा संयोजन अधिक या कम संतोष देता है।

(4) आय स्थिर रहती है

व्याख्या

- विश्लेषण के समय उपभोक्ता की आय में परिवर्तन नहीं माना जाता।
- इससे वास्तविक प्रभाव को समझना आसान होता है।

(5) वस्तुएँ विभाज्य (Divisible Goods)

व्याख्या

- वस्तुओं को छोटी-छोटी इकाइयों में विभाजित किया जा सकता है।
- इससे विभिन्न संयोजन बनाना संभव होता है।

(6) दो वस्तुओं का अध्ययन

व्याख्या

- विश्लेषण में केवल दो वस्तुएँ (जैसे चाय और कॉफी) मानी जाती हैं।
- इससे उपभोक्ता के चुनाव को सरल बनाया जाता है।

6. सीमान्त प्रतिस्थापन दर (Marginal Rate of Substitution - MRS)

परिभाषा

सीमान्त प्रतिस्थापन दर (MRS) वह दर है जिस पर उपभोक्ता समान संतुष्टि बनाए रखते हुए एक वस्तु की अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए दूसरी वस्तु की कुछ मात्रा त्यागने को तैयार होता है।

व्याख्या

✓ यह उपभोक्ता की पसंद का माप है।

✓ MRS सदैव घटती हुई होती है, क्योंकि किसी वस्तु की मात्रा बढ़ने पर उसका अतिरिक्त महत्व कम होता जाता है।

सूत्र

$$MRS = \frac{\Delta Y}{\Delta X}$$

जहाँ,

✓ ΔY = त्यागी गई वस्तु की मात्रा

✓ ΔX = प्राप्त की गई वस्तु की मात्रा

7. MRS के घटने के कारण

(1) घटती सीमांत उपयोगिता

- किसी वस्तु की अधिक मात्रा मिलने पर उसकी अतिरिक्त उपयोगिता कम होती जाती है।
- इसलिए दूसरी वस्तु का त्याग करने की इच्छा घटती है।

(2) वस्तुओं की पूरकता

- उपभोक्ता दोनों वस्तुओं का संतुलित उपयोग करना चाहता है।
- किसी एक वस्तु की अधिकता उपयोगिता नहीं बढ़ाती।

8. बजट रेखा (Budget Line)

परिभाषा

बजट रेखा उन सभी संभावित वस्तु-संयोजनों को प्रदर्शित करती है जिन्हें उपभोक्ता अपनी निश्चित आय एवं वस्तुओं की दी गई कीमतों पर खरीद सकता है।

व्याख्या

✓ यह उपभोक्ता की आय तथा वस्तुओं की कीमतों पर निर्भर करती है।

✓ बजट रेखा उपभोक्ता की क्रय-शक्ति (Purchasing Power) को दर्शाती है।

समीकरण

$M=P_xX+P_yY$

जहाँ,

✓ M = आय

✓ Px = X वस्तु का मूल्य

✓ Py = Y वस्तु का मूल्य

9. बजट रेखा में परिवर्तन

(1) आय में परिवर्तन

- आय बढ़ने पर बजट रेखा समानांतर बाहर की ओर खिसकती है।
- आय घटने पर अंदर की ओर खिसकती है।

(2) मूल्य में परिवर्तन

- किसी वस्तु का मूल्य बदलने पर बजट रेखा घूमती (Rotate) है।
- दूसरी वस्तु का मूल्य स्थिर रहने पर केवल एक अक्ष का अवरोध बदलता है।

10. उपभोक्ता संतुलन (Consumer Equilibrium)

परिभाषा

उपभोक्ता संतुलन वह स्थिति है जहाँ उपभोक्ता अपनी आय एवं कीमतों की सीमा में रहते हुए अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है।

संतुलन की शर्तें

(1) उदासीनता वक्र एवं बजट रेखा स्पर्श करें

- स्पर्श बिन्दु पर उपभोक्ता को सर्वाधिक संतुष्टि मिलती है।
- इसे संतुलन बिन्दु कहा जाता है।

(2) MRS = वस्तुओं के मूल्य अनुपात

$$MRS = \frac{P_x}{P_y}$$

- इस बिन्दु पर उपभोक्ता किसी अन्य संयोजन में जाने की इच्छा नहीं रखता।

11. उदासीनता वक्र विश्लेषण के लाभ (Merits)

(1) उपयोगिता को मापने की आवश्यकता नहीं।

(2) उपभोक्ता व्यवहार का अधिक यथार्थ विश्लेषण।

(3) आय एवं प्रतिस्थापन प्रभाव की स्पष्ट **व्याख्या**।

(4) मूल्य परिवर्तन के प्रभाव का बेहतर अध्ययन।

(5) आधुनिक उपभोक्ता सिद्धांत का आधार।

12. उदासीनता वक्र विश्लेषण की सीमाएँ (Demerits)

(1) उपभोक्ता की विवेकशीलता सदैव संभव नहीं।

(2) केवल दो वस्तुओं का अध्ययन।

(3) प्राथमिकताओं का स्थिर रहना वास्तविक जीवन में कठिन।

(4) सभी वस्तुओं को विभाज्य मानना व्यावहारिक नहीं।

(5) संतुष्टि को प्रत्यक्ष रूप से मापना संभव नहीं।

Toppersnotes Unleash the topper in you

महत्वपूर्ण तथ्य

- ✓ J. R. Hicks एवं R. G. D. Allen – उदासीनता वक्र सिद्धांत के प्रतिपादक।
- ✓ Ordinal Utility (क्रमवाचक उपयोगिता) – उपयोगिता को केवल क्रम (Ranking) के आधार पर व्यक्त किया जाता है।
- ✓ Indifference Curve – समान संतुष्टि देने वाले विभिन्न वस्तु-संयोजनों का समूह।
- ✓ MRS (Marginal Rate of Substitution) – एक वस्तु की अतिरिक्त इकाई के बदले दूसरी वस्तु की त्यागी गई मात्रा।
- ✓ Budget Line – आय एवं कीमतों के आधार पर उपभोक्ता की क्रय-सीमा।
- ✓ Consumer Equilibrium – जहाँ बजट रेखा उदासीनता वक्र को स्पर्श करती है तथा MRS = Px/Py होता है।
- ✓ उदासीनता वक्र नीचे की ओर ढलान वाला (Downward Sloping), मूल बिन्दु की ओर उत्तल (Convex to Origin) होता है तथा दो उदासीनता वक्र कभी एक-दूसरे को नहीं काटते।